शोध सारांश

प्रस्तुत शोध-प्रबंध 'गांधी जी की इतिहास दृष्टि' गांधी जी के विभिन्न विचारों का एक छोटा सा अंश है ,जिसमें उनके मौलिक विचारों में से इतिहास दृष्टि का अन्वेषण किया गया है .जिसमें उन्होंने, इतिहास के विषय में किस प्रकार कि अवधारणा रखते है,संदर्भ में है .इतिहास अतीत को ही कहा जाता है .इतिहास का तात्पर्य है—अतीत कि घटनाओं का तथा उसके इतिवृत जो भी दस्तावेज समेत है उन्हें ही मानते आये है .किन्तु गांधी जी इसको इतिहास नहीं मानते है .अनेक विद्वानों ने अपने-अपने तरह से इतिहास को व्याख्यायित और विश्लेषित किये हुए है .

विभिन्न विद्वानों ने इतिहास दर्शन और इतिहास दृष्टि के विषय में भी व्याख्या की है.तथा विभिन्न राजनितिक प्रकृति भी है .प्रसिद्ध इतिहासकार ए.एल.राउल राजनितिक इतिहास को 'इतिहास कि रीढ़' मानते है .राजनितिक संस्थाए समाज की रंगमंच हैं जहाँ महापुरुष अपने कार्यों को प्रदर्शित करते हैं .

इतिहासकार इतिहास को व्याख्यायित करते समय उसके समय और उसके इतिवृत तथा उस समय को प्रभावित करने वाले सभी कारकों का विशेष ध्यान रखते है .क्योंकि इतिहास को हम जब वर्तमान में याद करते है या उनका विश्लेषण करते है तभी तक वह इतिहास है .अन्यथा जब हम उसे पुनरवलोकन या पुनर्परीक्षण नहीं करेंगे तो वह एक समय के पश्चात् वह इतिहास धूमिल और अविश्वसनीय हो जायेगा . तथा उसको सिर्फ एक ही दृष्टिकोण से देखा जायेगा .

गांधी जी ने विभिन्न इतिहासकारों के इतिहास व्याख्या को नकार देते हैं.क्योंकि उनका मानना है कि यदि इतिहास युद्ध ही युद्ध है ,संघर्ष ही संघर्ष है तो वह समाज जल्दी ही नष्ट हो जायेगा. क्योंकि युद्ध और संघर्ष के कई स्वरुप होते है और वह निरंतर चलेगी .युद्ध एक पाश्विक बल के द्वारा होता है कभी वर्चस्व के लिए तो कभी जमीन के लिए .गांधी जी यह मानते है कि इन्सान में पाश्विक बल है किन्तु

उसके अंदर प्श्विक बल के साथ-साथ आत्मबल भी है .जो उसे समाज में प्रेम ,सहयोग ,शांति ,अहिंसा सिखाती है .और यह प्रबल मात्रा में होती है .जो मानव सभ्यता को बचाने के लिए आवश्यक है .गांधी जी इतिहासकारों के इस बात पर खफा थे कि वह उन लोगों को इतिहास में क्यों नहीं दर्ज करते जो न ही युद्ध करते है और न ही संघर्ष . क्योंकि राजा आते है और चले जाते है किन्तु प्रजा सदैव एक समान स्थिर रहती है और वास्तव में सभ्यता को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक लाने का काम भी इन्ही प्रजाओं के ऊपर ही होता है . यदि राजा नैतिक है तो उसकी गिनती इतिहास में बहुत कम है ,यदि राजा अहिंसक है तो वह भी इतिहास में नगण्य है .किन्तु यदि राजा युद्ध करने वाला हो तो इतिहास में उसके शासन काल को बहुत रुचिपूर्ण लिखा जाता है .

इसी प्रकार गांधी जी विद्वानों के इस प्रकार मार-काट,विजय-पराजय,लाभ-हानि को ही इतिहास अपने विषय-वस्तु में लिखते है ,वह वास्तविक इतिहास नहीं मानते है .क्योंकि वह इतिहास होता तो आज मानव इतना विकास करके आगे नहीं बढ़ता .वह संघर्ष के दौरान ही समाप्त हो जाते और मानवीय सभ्यता समाप्त हो जाती .

अतः गांधी जी उसको इतिहास मानते है जो युद्धों के पश्चात् संघर्षों के बाद भी आपस में एक दुसरे के प्रति प्रेम,सहयोग और सौहार्दय कि भावना के साथ जी रहे हैं .जिनमें सत्य है ,जो अहिंसा का पालन करते है जो संस्कृति को बचा के रखे है उनका कही भी इतिहास में जिक्र नहीं होता है. गांधी जी उनको इतिहास में लेखनबद्ध करने की वकालत करते है .और यही गांधी जी का ऐतिहासिक दृष्टिकोण है ,जो सभी इतिहासकारों से बिलकुल भिन्न है .गांधी जी मानवता को बनाये रखने के लिए इनका भरपूर समर्थन करते है .